''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

नेकराम, प्राचार्य एवं व्याख्याता, श्री इंदिरा गाँधी मेमोरियल पी जी महाविधालय, पीलीबंगा
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर

सारांश :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' करना है। इस शोध अध्ययन में ''स्वनिर्मित आपदा प्रबन्धन अभिवृत्ति मापनी'' का उपयोग किया गया है। परिणामों की गणना करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तकनीकी शब्द – आपदा प्रबन्धन एवं अभिवृत्ति।

प्रस्तावना :–

प्रारंभ से ही मनुष्य मानवीय व प्राकृत्तिक आपदाओं का सामना करता आ रहा है। प्राकृतिक एवं मानवीय आपदाओं की घटनाओं और उनसे पड़ने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण के प्रभाव की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होती जा रही है। इन आपदाओं के कारण जो समुदाय प्रभावित होते हैं, उन्हें जान–माल और जीवन यापन करने के लिए जरूरी संसाधनों की भारी हानि उठानी पड़ती है। इन आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में विकास की गति रुक जाती है और ये क्षेत्र विकास की दौड़ में काफी पीछे चले जाते हैं। यदि इन आपदाओं के सम्बन्ध में शिक्षा प्रदान की जाए तो आपदाओं से काफी हद तक बचाव किया जा सकता है। आपदा शिक्षा का सर्वप्रमुख उद्देश्य लोगों को प्रकोपों एवं आपदाओं के विभिन्न पक्षों से भली–भांति अवगत करना है, ताकि वे विभिन्न आपदाओं से न्यूनतम दुष्प्रभावित हो सकें। आपदा जैसी विकट समस्या का निवारण किसी एक व्यक्ति के बूते की बात नहीं है। इसका निवारण तो शैक्षिक स्थिति पर ही किया जाना अति आवश्यक है।

आपदा प्रबन्धन का अर्थ :–

आपदा प्रबन्धन में मुख्यतः आपदा से पहले उसके दौरान तथा बाद में किए जाने वाले उपायों का विवरण होता है। आपदा प्रबन्धन का मुख्य उद्देश्य जनता में जागरूकता पैदा करना और समुदायों की अपेक्षित स्थिति से निपटने के लिए तैयार करना है। साथ ही साथ आपदा के प्रभाव को कम करने वाली ऐसी समस्त कार्यवाही, जिसे आपदा के घटित होने से पूर्व की स्थिति में अंजाम दिया जा सकता है। इसमें मानव जनित दुर्घटनाओं के खतरों को कम करने के उपायों का नियोजन तथा क्रियान्वयन भी आता है और आपदा घटित होने की स्थिति में उससे निपटने के कारगर उपायों की योजना बनाना है।

शिक्षा में आपदा प्रबन्धनः–

शिक्षा में आपदा प्रबन्धन का सर्वप्रमुख उद्देश्य लोगों को प्रकोपों एवं आपदाओं के विभिन्न पक्षों जैसे आपदा के प्रकृति एवं उत्पत्ति की प्रक्रिया परिणाम एवं प्रचण्डता, होने वाली क्षति के प्रकार एवं मात्रा, आपदा पुर्वानुमान एवं आपदा चेतावनी प्रणाली, आपदा का सामना के लिए तैयारी एवं सुरक्षा के उपाय, आपदा के साथ समायोजन आदि से भली भांति अवगत करना है, ताकि विभिन्न आपदाओं से न्यूनतम दुष्प्रभाव हो सकें।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

आज हमारा देश प्राकृतिक एवं मानवीय आपदाओं से प्रभावित है। अनेक प्राकृतिक आपदाओं को आंशिक रूप से अथवा मानव के द्वारा प्रकृत्ति के अनियंत्रित दोहन के कृत्यों को विराम द्वारा रोका जा सकता है। यह कार्य तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक कि जनमानस में जागरुकता का अभाव है। इस विषय में समाज के प्रत्येक वर्ग में जागरुकता लानी अवश्यंभावी है। इसके लिये जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। प्रशिक्षणों के माध्यम से आपदा प्रबन्ध से जुड़े राजकीय अधिकारियों एवं तकनीकी विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

अनेक आपदाओं का अकेला व्यक्ति या एक परिवार सामना नहीं कर सकता, इसलिए सामुदायिक रूप से कार्य करने की जरूरत पड़ती है। यदि सामूहिक रूप से विचार करना हो तो सारे समुदाय को इस विचार–विमर्श में एकाएक भाग लेने की जरूरत पड़ती है, नहीं तो आपदाएँ बहुत कम समय में भयंकर परिणाम पैदा कर सकती हैं। ये योजनाएँ पास–पड़ौस, ग्रामीण, खंड, जिला, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर तैयार की जाती हैं। इसमें सरकारी तथा गैर–सरकारी संगठन शामिल होते हैं।

जवाहर लाल नेहरू ने युवा वर्ग को भारत का भविष्य बताया है। अतः युवा वर्ग को विश्व के समक्ष उपस्थित इस नई चुनौती का सामना करने के लिए जागरुक करने का प्रयास सरकार द्वारा किया जाना चाहिए। वे जन जागरण का एक सशक्त माध्यम बन सकते हैं। इस दृष्टि से सरकार ने विभिन्न पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को आपदाओं के बारे में जानकारी देना प्रारम्भ कर दिया है तथा आपदा प्रबन्धन की प्रविधियों से भी अवगत कराने का प्रयास किया है। अतः निश्चित रूप से यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इस क्षेत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों के माध्यम से कितनी उपयोगी विषय–वस्तु विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही है, विषय वस्तु किन विधियों के माध्यम से दी जा रही है।

क्या विषय वस्तु सूचना मात्र है या गुणात्मक रूप से भी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, क्या विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् समाज में अपेक्षित भूमिका का निर्वाह कर पायेगा। उपर्युक्त विचारों को दृष्टिगत करते हुए शोधार्थी ने माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विभिन्न पाठ्यक्रमों के तहत आपदा प्रबन्धन का अध्ययन करने का मानस बनाया है।

समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्न प्रकार से है –

''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं –

1. माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की हैं :–

1. माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत शोध को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा संचालित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध को श्रीगंगानगर जिले के सरकारी क्षेत्र व निजी क्षेत्र द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध को 120 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है, जिसमें से 60 छात्र–छात्राएँ माध्यमिक स्तर के तथा 60 छात्र–छात्राएँ उच्च माध्यमिक स्तर के हैं। **शोध में प्रयुक्त विधि :–**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

1. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में श्रीगंगानगर जिले के कुल 120 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 60 छात्र–छात्राओं को चयनित किया गया है, जिसमें से निजी क्षेत्र के 30 छात्र–छात्राओं एवं शहरी क्षेत्र के 30 छात्र–छात्राओं को चयनित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के 60 छात्र–छात्राओं को चयनित किया गया है, जिसमें से निजी क्षेत्र के 30 छात्र–छात्राओं एवं शहरी क्षेत्र के 30 छात्र–छात्राओं को चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु **"स्वनिर्मित आपदा प्रबन्धन अभिवृत्ति मापनी"** का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

तथ्यों का विश्लेषण :–

सारणी संख्या 1 माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सी–मूल्य	परिणाम
1.	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थी	60	35.73	5.30	0.56	स्वीकृत
2.	उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थी	60	35.20	5.36		

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 35.73 व 35.20 है तथा मानक विचलन क्रमशः 5.30 व 5.36 है। अतः इनका 'सी' मूल्य 0.56 प्राप्त हुआ है, जो कि स्वातंत्र्य की कोटि 118 के निर्धारित 0.05 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य से कम है। अतः परिकल्पना सं. 1 ''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के

विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' स्वीकृत है और कहा जा सकता है कि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या 2 माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	माध्यमिक स्तर निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	30	33.40	5.80	0.83	स्वीकृत
2.	उच्च माध्यमिक स्तर निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	30	32.47	5.50		

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 33.40 व 32.47 है तथा मानक विचलन क्रमशः 5.80 व 5.50 है। अतः इनका 'टी' मूल्य 0.83 प्राप्त हुआ है। जो कि स्वातंत्र्य की कोटि 58 के निर्धारित 0.05 विश्वास स्तर तथा 0.01 विश्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य से कम है। अतः परिकल्पना संख्या 2 ''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' स्वीकृत है और कहा जा सकता है कि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या 3 माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	30	34.34	5.36	0.55	स्वीकृत
2.	उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	30	33.27	5.42		

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 34.34 व 33.27 है तथा मानक विचलन क्रमशः 5.36 व 5.42 है। अतः इनका 'टी' मूल्य 0.55 प्राप्त हुआ है। जो कि स्वातंत्र्य की कोटि 58 के निर्धारित 0.05 विश्वास स्तर तथा 0.01 विश्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य से कम है। अतः परिकल्पना संख्या 3 ''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' स्वीकृत है और कहा जा सकता है कि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया तथा अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्त विश्लेषण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :–

परिकल्पना 1 :–

''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि सम्भवतः सैद्धान्तिक ज्ञान की अपेक्षा प्रायोगिक कार्य एवं शिक्षण–प्रक्रिया अभिवृत्ति को अधिक प्रभावित करती है। प्रशासनिक आधार का माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर का कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 2 :–

''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्ध की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के छात्र व छात्राओं के लिए पाठ्यक्रम समान है। विद्यालयों में आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित होने वाले कार्यक्रमों, प्रशिक्षण, वाद–विवाद, निबन्ध प्रतियोगिता व प्रश्नोत्तरी आदि में छात्र व छात्राओं को समान रूप से सम्मिलित किया जाता है, जिससे छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति समान रहती है।

परिकल्पना 3 :–

''माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्धन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आपदा प्रबन्ध की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम समान है। इसलिए सामान्य पाठ्यक्रम द्वारा आपदा प्रबन्धन पर दी जाने वाली शिक्षा समान ही होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ग्रीन स्टीवन (1980) : "इन्टरनेशल डिजास्टर रिलीफ टुवर्डस ए सिस्टम", मैग्रहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क
2. मिश्रा गिरिश के.माथुर (1993) : "नेचुरल डिजास्टर रिडक्शर" ऑफ जी.सी. (सम्पादन), पब्लिक हाउस एण्ड इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली
3. प्रकाशन इन्दु (1994) : "डिजास्टर मैनेजमेंट", राष्ट्र प्रहरी प्रकाशन, गाजियाबाद (यू.पी.)
4. गुप्ता, आर.सी. भट्ट (2005) : ''शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा
5. अस्थाना, विपिन (2003) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6. माथुर, डॉ. एस.एस. (2010) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

9828015814 9309941581 4
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY